रात्रिक्लास 20-3-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

तुम ब्राह्मणों बच्चों बिगर बाकी हैं शुद्र। उनको यह पता नहीं है संगम युग कब होता है। इस कल्प की संगम युग की बहुत महिमा है। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। वह सिखलाते ही हैं सतयुग के लिए तो जरूर संगम पर ही आवेंगे ना। है यह भी मनुष्य। उनमें कोई कनिष्ट कोई उत्तम है। उनके आगे महिमा गाते हैं। आप पुरुषोत्तम हो हम कनिष्ट हैं। आपे ही बताते हैं मैं ऐसे हूं। ऐसे हूं। बाकी ऐसे नहीं कहते हैं हम बन्दर हूं। एक दो को जनावर भी कहते हैं, बन्दर मकना हाथी भी कह देते हैं। हाथी भी बुध होता है। जैसे भैंस। अभी यह पुरुषोत्तम संगम तुम ब्राह्मणों बिगर कोई भी नहीं जानते। उनको कैसे एडरबटाईज करें जो मनुष्यों को पता पड़ें। संगम युग पर भगवान ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। अभी ऐसी क्या युक्ति रचें जो मनुष्यों को पता पड़े। परन्तु होगा धीरे2। अभी समय पड़ा है। बहुत गई थोड़ी रही... हम कहते हैं तो मनुष्य जल्दी पुरुषार्थ करें नहीं तो हम कहेंगे सेकण्ड में ज्ञान मिलता है। तो हम उस समय सेकण्ड में जीवन्मुक्ति पा लेंगे। तुम्हारे अगा कल्प के पाप सिर पर है। वह थोड़े ही सेकण्ड में कटेंगे। उसमें टाईम लगता है। मनुष्य समझते हैं अभी 9वर्ष पड़े हैं। अभी हम ब्रह्मा कुमारियों पास क्यों जावें। लिटरेचर से उल्टा भी उठा लेते हैं। तुम समझते हो यह पुरुषोत्तम बनने का संगम युग है। यह है हीरे जैसा। गाते भी हैं गोल्डेन जैसा सिल्वर जैसा एज... यह संगम युग है डायमन एज। सतयुग है गोल्डेन एज। यह तुम जानते हो स्वर्ग से यह संगम अच्छा। हीरे जैसा जन्म अमोलक गायन है ना। फिर कम हो जाता है। जवाहर से कम सोना। तुम यह भी लिख सकते हो पुरुषोत्तम संगम युग है बर्थ डायमन्ड। सतयुग बर्थ गोल्ड। त्रेता बर्थ सिल्वर... यह भी समझा सकते हो। संगम पर ही हम मनुष्य से देवता बनते हैं। आठ रत्न गाये जाते हैं ना। तो डायमन को बीच में रखा जाता है। हीरे का भी होता है। संगम है ही हीरे जैसा। हीरे का मान संगम युग पर है। ऐसे योग आदि जो सिखलाते हैं जिसको स्पीच्युअल योग कहते हैं। परन्तु स्पीच्युअल तो फादर ही है रूहानी। फादर और रूहानी नालेज संगम पर ही मिलती है। मनुष्य तो जो बड़े2 बन्दर हैं वह इतना जल्दी नहीं समझेंगे। गरीब आदि को समझाया जाता है। वह तो गुरर गुरर करते हैं। तुमको छाटना पड़े कहां लिखा हुआ है। तुम कहेंगे फलाने वेद में ऐसा है। तो समझेंगे यह शायद बहुत वेद-शास्त्र पढ़ी है।

तो यह लिखना है संगम युग इज डायमन। उनकी आयु इतनी। सतयुग गोल्डेन एज उनकी आयु इतनी। शास्त्रों में भी स्वस्तिका निकलते हैं। तुम बच्चों को यह भी याद रहे तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। स्टुडन्ट को खुशी होती है ना। स्टुडन्ट लाईफ इज दी बेस्ट लाईफ। यह तो बहुत सीक्रेट है। मनुष्य से देवता बनने की पाठशाला है। देवतायें तो विश्व के मालिक थे। यह भी तुमको मालूम है तो अथाह खुशी होनी चाहिए। इसलिए गायन है अति इन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। टीचर अन्त तक पढ़ाते हैं तो उनको अन्त तक याद करना चाहिए। भगवान पढ़ाते हैं। और फिर भगवान साथ ले जावेंगे। पुकारते भी हैं लिबरेटर गाईड। दुःख से छूड़ा देते हो। सतयुग में दुःख होता नहीं। कहते हैं विश्व में शान्ति हो। बोलो आगे कब थी? उस समय कौनसा युग था। किसको भी पता नहीं। राम-राज्य सतयुग रावण राज्य कलियुग। यह तो तुम ही जानते हो। अभी तुम रावण सम्प्रदाय हो ना। कोई आरग्यु करे तो तुम कर सकते हो।

बच्चों को अनुभव सुनाना चाहिए, बस क्या सुनाऊं दिल की बात। बेहद का बाप बेहद की बादशाही देने वाला मिला और क्या अनुभव सुनाऊं और कोई बात ही नहीं। इन जैसी खुशी और कोई होती नहीं। कोई भी हालत में कब रूस कर घर न बैठ जाओ। यह जैसे अपने तकदीर से रूठना होता है। पढ़ाई से रूठेंगे तो क्या सीखेंगे। बाप को पढ़ाना ही है ब्रह्मा द्वारा। तो एक दो से कब रूठना न चाहिए। यह है माया। यज्ञ में असुरों के विघ्न पड़ते हैं। मनुष्यों को न भगवान कहा जा सकता है न देवता कहा जा सकता है। ओम।